डॉ० अमित कुमार भारती

पिता का नाम : श्री विन्द्रप्रसाद

माता का नाम : श्रीमती यशोदा देवी

जन्म तिथि : 18 अप्रैल 1980

शैक्षिक योग्यता : एम०ए० (हिन्दी), एम०फिल०, यू०जी०सी० नेट, यू०जी०सी०, आर०जी०एन०एफ०- एस०आर०एफ०, पीएच०डी०
संस्कृत एकल विषय के रूप में स्नातक - 2005
मराठी विषय में प्रोफिसिन्सी कोर्स - 2006

प्रकाशित पुस्तकें एवं शोध पत्र-

1. हिन्दी उपन्यास और आदिवासी विमर्श (2016)
2. भोजपुरी का स्वनिमिकीय अध्ययन (गोरखपुर के सहजनवाँ क्षेत्र में बोली जाने वाली) (2017)

एक दर्जन शोध आलेख प्रकाशित एवम् लगभग दो दर्जन राष्ट्रीय और 03 अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध पत्र वाचन तथा 04 राष्ट्रीय कार्यशालाओं में सहभागिता।

सम्प्रति :

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खलीलाबाद, संत कबीर नगर (उ.प्र.) - 272175

मो.नं. : 7705046376, 9536577900

ई-मेल : dr.amitbharti@gmail.com

326

575.00

ISBN : 978-93-80669-79-3

ज्ञान प्रकाशन

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

/202, एल.आई.जी. आवास विकास, हंसपुरम्, नौबस्ता, कानपुर-208021

Email : gyanprakashankanpur@gmail.com

Mob. : 8004516501

हिंदी उपन्यास और आदिवासी विमर्श • डॉ० अमित कुमार भारती

हिंदी उपन्यास और आदिवासी विमर्श

डॉ. अमित कुमार भारती

हिंदी उपन्यास और आदिवासी विमर्श

सम्पादक
डॉ॰ अमित कुमार भारती

327

ज्ञान प्रकाशन
कानपुर-21

ISBN : 978-93-80669-79-3

पुस्तक	:	हिंदी उपन्यास और आदिवासी विमर्श
सम्पादक	:	डॉ. अमित कुमार भारती
प्रकाशक	:	ज्ञान प्रकाशन 7/202, एल. आई. जी., आवास विकास, हंसपुरम् नौवस्ता, कानपुर-208 021 मो0 : 8004516501
E-mail	:	gyanprakashankanpur@gmail.com
संस्करण	:	प्रथम, 2017
मूल्य	:	575.00 रुपये मात्र
शब्दसज्जा	:	विष्णु ग्राफिक्स, नौबस्ता, कानपुर मो. : 8009017637
मुद्रक	:	पूजा प्रिण्टर्स नौबस्ता, कानपुर

HINDI UPANYAS AUR AADIWASI VIMARSH

Editted By : Dr. Amit Kumar Bharti

Price : Rs. Five Hundred Seventy Five Only

समर्पण

परम आदरणीय श्रद्धेय गुरुवर

प्रोफेसर सत्यदेव मिश्र जी

को

सादर....

328

धन्यवाद ज्ञापित न करना कृतघ्नता होगी। डॉ. इकरार अहमद जी, एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, विवेकानन्द ग्रामोद्योग महाविद्यालय दिबियापुर – औरैया तथा डॉ. प्रत्यूष दुबे जी, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खलीलाबाद – संत कबीर नगर के प्रति भी विशेष आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिनका सहयोग एवं मार्गदर्शन सदैव मुझे मिलता रहा है। परिवार के सहयोग के बिना कोई कार्य संभव नहीं है। मेरे पिता श्री विन्दा प्रसाद एवं माता श्रीमती यशोदा देवी का स्नेह और आशीर्वाद मुझे ऊर्जा प्रदान करता रहा है। पत्नी श्रीमती रीमा भारती पुत्र द्वय शाश्वत प्रज्ञ एवं श्रेयांश प्रज्ञ और मेरी बहन चन्द्रलेखा ने पारिवारिक उत्तरदायित्व के निवर्हन में हमारी मदद कर प्रकारान्तर से मुझे सहयोग प्रदान किया है। मैं इन सभी के प्रति भी आभारी हूँ। धन्यवाद ज्ञापित करना चाहूँगा ज्ञान प्रकाशन, कानपुर के नरेन्द्र शुक्ल जी के प्रति भी जिन्होंने इस पुस्तक को सुन्दर रूप देने में अवदान किया।

इस पुस्तक के लिए हिन्दी साहित्य के विद्वान आलोचकों ने अपना उत्कृष्ठ लेखन उपलब्ध कराया है उनके प्रति हार्दिक आभार।

डॉ. अमित कुमार भारती
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
हीरालाल रामनिवास स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, खलीलाबाद
सन्त कबीर नगर (उ० प्र०)

अनुक्रमणिका

1. काला पादरी : आलोचना, अन्तर्कथा एवं कुछ और.... 13 - 44
प्रोफेसर दयाशंकर

2. आदिवासी और धूणी तपे तीर 45 - 52
डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल

3. जंगल का समाजशास्त्र 53 - 75
डॉ. यशवन्त कुमार वीरोदय

4. विकिरण, प्रदूषण और विस्थापन की त्रासदी झेलते आदिवासियों की त्रासद गाथा : 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' 76 - 87
डॉ. नवीन नन्दवाना

5. माड़िया-गोंड़ो आदिवासी का संवेदनशील दस्तावेज़ : शाल वनों का द्वीप 88 - 104
डॉ. माया प्रकाश पाण्डेय

6. 'आमचो बस्तर' में चित्रित आदिवासी जन-जीवन 105 - 119
डॉ. सुभद्रा राठौर

7. अधिकार का जागरण : शैलूष 120 - 127
डॉ. श्रीपति कुमार यादव

8. रणेंद्र- ग्लोबल गाँव का देवता 128 - 132
डॉ. गौरी त्रिपाठी

9. उपनिवेशवाद में नवसाम्राज्यवादी शोषण का यथार्थ : गायब होता देश 133 - 138
बृजेश कुमार कौशल

329

10. एक आदि विद्रोही तिलका मांझी की दास्ताँ : हुल पहाड़िया 139 - 143
डॉ. अखिलेन्द्र प्रताप सिंह

11. रोटी के लिये मछुआरों का प्रकृति के विकराल रूप के विरुद्ध संघर्ष 144 - 150
रूपनारायण सोनकर

12. कबूतरा जनजाति के मुक्ति का विमर्श : अल्मा कबूतरी 151 - 160
डॉ. सूर्या पुरवार

13. संघर्ष और चेतना की अभिव्यक्ति : सहराना 161 - 168
डॉ. अमित कुमार भारती

14. शोषण के विरुद्ध 'समर शेष है' 169 - 174
डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी

15. आदिवासी जीवन की व्यथा-कथा : गगन घटा घहरानी 175 - 179
डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर

16. आदिवासी विद्रोह : 'जहाँ बाँस फूलते हैं' 180 - 192
डॉ यशवंत सिंह

1

काला पादरी : आलोचना, अन्तर्कथा एवं कुछ और....

उत्तरशती के हिंदी कथाकारों में कुछ ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने थोक के बदले बहुत कम संख्या में उपन्यास लिखकर हिंदी पाठकों के बीच अपनी व्यापक स्वीकृति अर्जित की है। ऐसे गिने–चुने उपन्यासकारों में अलका सरावगी, चित्रा मुद्गल, तेजिंदर, रणेन्द्र, महुआ माज़ी आदि के नाम लिये जा सकते हैं। तेजिंदर का पहला उपन्यास 'ओ मेरा चेहरा' सन् १९९० में प्रकाशित हुआ था जो पंजाब के आतंकवाद का उसके बाहर के युवाओं के मन पर पड़ने वाले असर का बड़ी संवेदनशीलता से बयान करता है। 'उस शहर तक' (सन् १९९७) तेजिंदर का दूसरा उपन्यास है जो एक पढ़े–लिखे दलित युवक द्वारा शहर में किराये का मकान ढूँढ़ने–पाने और उसके दलित होने का राज उजागर होने पर उसकी शारीरिक – मानसिक यंत्रणा से हमारा साक्षात्कार करवाता है। तेजिंदर का तीसरा उपन्यास 'काला पादरी' सन् २००२ में प्रकाशित हुआ जो उच्च मध्यवर्गीय नौकरशाही, आदिवासी बहुल सरगुजा छत्तीसगढ़ में धर्मांतरित ईसाई आदिवासियों की युवापीढ़ी की मानसिक बनावट, उनकी उलझन, मुश्किल, मुक्ति और उनको लेकर टुच्ची भारतीय राजनीति का साहित्यिक समाजशास्त्रीय दस्तावेज की तरह हमारे सामने आता है। सन् १९८० के बाद हमारे देश की तीन ज्वलंत समस्याओं– आतंकवाद, धर्मांतरण, दलित और आदिवासी प्रश्न पर उपन्यास लिखते हुए तेजिंदर मौजूदा हिंदी उपन्यासों के साहित्यिक सामाजिक सरोकारों के दायरे का विस्तार तो करते ही हैं, प्रेमचंद की साहित्यिक – सामाजिक सरोकारों वाली उपन्यास परंपरा की रक्षा, विकास और गुणात्मक संवर्द्धन भी करते हैं वे हाल के हिंदी उपन्यासों की वस्तु और रूप के वैविध्य को प्रमाणित करते हैं और उसमें कुछ नया जोड़कर उसे और समृद्ध करते हैं।

तेजिंदर के 'काला पादरी' की लोकप्रियता का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि इस पर प्रसिद्ध कथाकार उदय प्रकाश, प्रसिद्ध कथा आलोचक वीरेन्द्र यादव की महत्त्वपूर्ण टिप्पणियाँ हैं। डॉ. परमानंद श्रीवास्तव, डॉ. चमनलाल जैसे आलोचकों के स्वतंत्र आलेख हैं। उदय प्रकाश 'काला पादरी' के पीठ पृष्ठ

4

विकिरण, प्रदूषण और विस्थापन की त्रासदी झेलते आदिवासियों की त्रासद गाथा : 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ'

समय चक्र नित्य गतिमान रहता है। उसका जो भाग कभी नीचे की ओर होता है, वह समय के साथ ऊपर जाता है और ऊपर वाला हिस्सा नीचे। यह परिवर्तन शाश्वत है। समय की इस प्रक्रिया से कोई भी बच नहीं पाता है। साहित्य में भी हम यही सब देख सकते हैं। आज से कुछ दशकों पहले तक जो स्त्री, दलित और आदिवासी साहित्य जगत में हाशियें पर थे, आज वे एक विमर्श के रूप में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवा रहे हैं। आज उसी उपेक्षित या हाशिये के समाज की चहुँ ओर चर्चा है। वर्ष भर में कई संगोष्ठियाँ, पुस्तकें और पत्रिकाओं के विशेषांक इन विषयों पर आधारित होते हैं। इन विमर्शों में से एक प्रमुख विमर्श 'आदिवासी विमर्श' है।

आज का रचनाकार आदिवासी जीवन के यथार्थ को प्रमुख रूप से उद्घाटित कर रहा है। कविता कहानी और विशेष रूप से उपन्यासों के माध्यम से हमारे रचनाकारों ने आदिवासी जीवन को विविध दृष्टिकोणों से रूपायित किया है। इन रचनाकारों ने इनके जीवन से जुड़े 'जल, जंगल और जीवन' के मुद्दों को प्रमुखता से उठाया है।

आज आदिवासी शब्द सुनते ही वे लोग याद आते हैं जो जंगलों एवं पहाड़ों से घिरे विशिष्ट प्रकार के वातावरण में विशिष्ट भाषा एवं जीवन पद्धति के माध्यम से अपने धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित किए हुए हैं। अर्द्धनग्न स्थिति में जंगल–जंगल भटकने वाले ये लोग वास्तव में जंगल के अनाभिषिक्त राजा हैं जिन्हें भारतीय संविधान अनुसूचित जनजाति का दर्जा देता है। आदिवासी शब्द किसी क्षेत्र विशेष के मूल निवासियों के लिए प्रयुक्त होता है जो कि आदिकाल से ही किसी विशिष्ट स्थल पर निवास करते रहे हैं। अपनी जरूरतों के लिए ये लोग बाजार व्यवस्था पर कम से कम आश्रित होते हैं तथा इनकी धार्मिक एवं सामाजिक व्यवस्था प्रकृति से अधिकाधिक जुड़ाव रखती है।

आदिवासी लोग प्रारंभ से ही कष्टप्रद जीवन जी रहे हैं और आज भी ये लोग चिंताजनक स्थिति में ही जीने को मजबूर हैं। विकास के साथ–साथ इन लोगों से इनकी जमीनें भी छीनी जा रही है। हमारे देश में अधिकांश कोयला खानें, खनिज पदार्थ, जलविद्युत बाँध एवं अन्य प्राकृतिक संसाधन आदिवासी क्षेत्रों में ही उपलब्ध हैं। बढ़ते नगरों में खपने वाला अधिकतर कच्चा माल हमें इन्हीं क्षेत्रों से मिलता है फिर भी अधिकांश आदिवासी लोग जीवन की मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित हैं। विभिन्न आर्थिक नीतियों के कारण धीरे–धीरे ये लोग वन मजदूर बनते जा रहे हैं। विकास योजनाओं के साथ–साथ विस्थान का दर्द भी हर समय इनके साथ जुड़ा रहा है।

इतना सब सहते हुए भी ये आदिवासी लोग भारत के जिस किसी कोने में बसे हों अपनी संस्कृति को बचाए हुए हैं। ये लोग विविध आचार–विचार, विश्वासों, रीति–रिवाज, परम्पराओं से बनी संस्कृति रूपी इकाई के संरक्षण हेतु हर समय प्रयत्नशील रहते हैं। इन लोगों का जीवन बहुत सरल, सहज एवं सादा है तथा इनके मूल में जीओ और जीने दो की संकल्पना विद्यमान है। सामूहिक सहयोग एवं अनुशासन की भावना इनके दैनिक जीवन के प्रत्येक क्रियाकलाप से दिखाई पड़ती है। सामान्य जीवन में विश्वास रखने वाले ये लोग अपनी आवश्यकताएँ भी बहुत सीमित रखते हैं, जिससे कि सुखी जीवन जी सकें।

हिंदी में उपन्यास लेखन को लेकर आदिवासी जीवन को केंद्र में रखकर कई उपन्यास लिखे जा चुके हैं। उनमें रांगेय राघव का 'कब तक पुकारूं', उदयशंकर भट्ट का 'सागर लहरें और मनुष्य' राजेंद्र अवस्थी का 'सूरज किरण की छाँव', 'जाने कितनी आँखें', एवं 'जंगल के फूल', शिवप्रसाद सिंह का 'शैलूष', संजीव का 'धार', 'जंगल जहाँ शुरू होता है', 'सावधान नीचे आग है' और 'पाँव तले की दूब', वीरेंद्र जैन का 'डूब' और 'पार', श्रीप्रकाश मिश्र का 'जहाँ बाँस फूलते हैं', मैत्रेयी पुष्पा का 'अल्मा कबूतरी' भगवानदास मोरवाल का 'काला पहाड़' मणि मधुकर का 'पिंजरे में पन्ना', शानी का 'सांप और सीढ़ी' तथा 'शालवनों का द्वीप', हिमांशु जेशी का 'सु–राज', 'महासागर' और 'अरण्य', दामोदर सदन का 'नदी के मोड़ पर', चंद्रमोहन प्रधान का 'एकलव्य', हबीब कैफी का 'गमना', हरिराम मीणा का 'धूणी तपे तीर', राजेंद्र मोहन भटनागर का 'मगरी मानगढ़', रणेंद्र का 'ग्लोबल गाँव के देवता', राजीव रंजन प्रसाद का 'आमचो बस्तर', श्याम बिहीर श्यामल का 'धपेल', विनोद कुमार का 'समर शेष है', योगेंद्रनाथ सिन्हा का 'वनलक्ष्मी' एवं 'वन के मन में', तेजिंदर का 'काला पादरी', मनमोहन पाठक का 'गगन घटा घहरानी', राकेश वत्स का 'जंगल के आस–पास', श्रवण कुमार का 'चक्रव्यूह', कृष्णचंद्र शर्मा 'भिक्खु' का 'रक्त यात्रा', राकेश कुमार सिंह का 'पठार का कोहरा', जहाँ खिले हैं रक्तपलाश' और 'जो इतिहास में नहीं हैं', जयप्रकाश भारती का 'कोहरे में खोये चांदी के पहाड़', मधुकर सिंह का 'बाजत अनहद ढोल' इत्यादि प्रमुख हैं। इसी